Indian Council of
Social Science Research

ANCHAL COLLEGE • PADAMPUR
सा विद्या या विमुक्तये

National Education Policy-2020
&
Outcome Based Education

OBE

Editors

Dr. Tusharkanta Sahu
Dr. Venkateswar Meher
Ms Sasmita Meher

Indian Council of Social Science Research

ANCHAL COLLEGE · PADAMPUR

Azadi Ka Amrit Mahotsav

National Education Policy-2020
&
Outcome Based Education
(First Edition)

Edited By

Dr. Tusharkanta Sahu

Dr. Venkateswar Meher

Ms Sasmita Meher

NOTION PRESS PUBLISHING PVT. LTD.

TAMILNADU, INDIA

Website: www.notionpress.com

NOTION PRESS PUBLISHING PVT. LTD.
Tamilnadu, India

National Education Policy-2020 & Outcome Based Education

2024, First Edition

© Dr. T. K. Sahu, Dr. V. Meher & Ms. S. Meher

All efforts have been made to avoid errors or omissions in this publication. Despite this, errors may creep in. Any mistake, error or discrepancy notes may be brought to our notice which shall be taken care of in the next edition. It is notified that neither the publisher nor the editors or seller will be responsible for any damage or loss of action to anyone, of any kind, in any manner, therefrom. It is suggested that to avoid doubt the reader should cross check all the facts, laws, and contents of the publication with original publication or notifications.

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form without the prior written permission of the publisher.

Printed and published by

Notion Press Publishing Pvt. Ltd., Tamilnadu, India

List of Chapters

S.N.	Authors	Paper Title	Pg.
1	Dr. Biranchi Sahu	National Education Policy 2020 and Outcome-Based Education	1-7
2	Dr. R. S. S. Neheru	Revolutionizing Education: Integrating Artificial Intelligence (AI) and Outcome-Based Education (OBE) into the NEP-2020 Curriculum Framework	8-19
3	Sujit Kuiry[1] Shaktipada Mahato[2], Jagriti Singha[3] & Dr. Laxmiram Gope[4]	Assessment of Learning Outcomes as per NEP 2020: A Study on Secondary Schools in West Bengal	20-30
4	Dr. Debasis Mahapatra	Yesterday's Right Answers are Today's Obsolete Solutions: Outcomes-Based Education	31-36
5	Dr. Akshaya Kumar Sahu	An Overview of the Multifaceted Role of Diet in Achieving Foundational Literacy and Numeracy in the Context of NEP 2020	37-42
6	Bhadrasen Saha[1] Dr. Neena Dash[2]	Transforming Vocational Education: Challenges and Solutions in the Light of NEP 2020	43-52
7	Dr. Chandrika Bhoi	Outcome-Based Education and Technology Integration in the Context of NEP-2020	53-61
8	Mrs. Aruna Mishra[1] Mr. Pradeep Kumar Panda[2]	Outcome-Based Education (OBE) in the Context of National Education Policy -2020	62-71
9	Tripti Kumari	Outcome-Based Education (OBE) in the Context of National Education Policy:-2020	72-79
10	Nibedita Agrawalla[1] Hemalata Agrawalla[2]	Role of Learning Outcomes in Curriculum Design and Assessment	80-87
11	Dr. Swapan Kumar Maity[1], Jitu Ghosh [2], Adwaitya Sar[3], Chandradev Pal[4]	Outcome-Based Education (O.B.E) with Special reference to Slum Areas of Purulia: An Inquiry	88-94
12	Dr. Suniti Dash & Dr. R.C. Supakar	A Vision to National Education Policy 2020 For Outcome Based Education	95-101
13	Sonali Hota	How do NCERT and SCERT, Odisha text book focus on outcome based education in the topic of Panchayatiraj system political	102-113

		science text book class-vi? A comparative content analysis	
14	डॉ. मोहित मिश्रा	नई शिक्षा नीति 2020 एवं भारतीय शिक्षा व्यवस्था	114-120
15	C. Kumar	Enhancing the awareness of "mishaps" through integrated approaches among Standard IX students in Government High School, Karigiri	121-128
16	Satyajit Baral & Sachikanta Padhan	Enhancing Educational Excellence: A Conceptual Framework for Effective Assessment of Learning Outcomes in the Context of National Education Policy (NEP) 2020	129-135
17	K Santosh Kumar Rao	Playful Learning, Powerful Outcomes: Gamifying Personalized Learning Paths in Outcome-Based Education	136-148
18	Dillip Kumar Dhal	A Study on 5Es Model Of Teaching for Enhancing Learning Outcomes in Science,	149-160
19	Dr. Nikita Yadav[1] & Prof. Rajkumari Singh[2]	Attitude of Teachers towards the Implementation of Outcome-Based Education in Higher Educational Institutions: A Descriptive Study	161-171
20	Manoj Haripal[1] Dr Sanjukta Bhuyan[2]	Relevance of Outcome-Based Education in 21st century	172-178
21	Dr. Sujata Meher	Uses of Technological Devices for Outcome-Based Environment	179-184
22	Dipanjali Sahu[1] Dr. Partha Sarathi Mallik[2]	Challenges in Implementing Outcome-Based Education. Do Parental Mind-Set and Support Matters?	185-192
23	Dr. Tusharkanta Sahu	A Critical Analysis of Challenges in the Implementation of Outcome-Based Education	193-204
24	Dr. Netramani Pradhan	Participation of Community in the Success of Foundational Literacy and Numeracy (FLN)	205-212
25	Dr. Venkateswar Meher[1] Kshetramani Bariha[2]	International Perspectives on Outcome-Based Education in the Context of National Education Policy-2020	213-232
26	Sasmita Meher & Dr. Venkateswar Meher	Evaluating Existing Case Studies on Successful implementation of Outcome Based Education: A Critical Analysis	233-240

Chapter-14

नई शिक्षा नीति 2020 एवं भारतीय शिक्षा व्यवस्था

डॉ. मोहित मिश्रा
सहायक प्राध्यापक
हिंदी विभाग
आईएफटीएम विश्वविद्यालय,
मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश
संपर्क–7982349547

सारांश– शिक्षा समाज की आवश्यक जरूरत है जिसके माध्यम से व्यक्ति को सामाजिक, राजनीतिक, पारिवारिक एवं मानसिक परिवेश को समझने का अवसर मिलता है। भारतीय पुरातन शिक्षा व्यवस्था को देखने पर ज्ञात होता है, कि औपचारिक शिक्षा मंदिर, आश्रमों और गुरुकुल के द्वारा प्रदान की जाती थी जो मुख्य शिक्षा का केंद्र माने जाते थे। हमारे सामाजिक विकास के साथ ही शिक्षण प्रणाली का भी विकास हुआ है, जिनमे वैदिक काल में परिषद, शाखा और चरण जैसे संघों की स्थापना गई थी लेकिन व्यवस्थित शिक्षण संस्थाएँ सार्वजनिक स्तर पर बौद्धों द्वारा प्रारंभ की गई थी, भारत की शिक्षा व्यवस्था का दृढ़ विश्वास रहा है कि शिक्षा व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक तथा आध्यात्मिक उत्थान का आधार स्तंभ होती है। आधुनिक युग की शिक्षा प्रणाली का केंद्र भी व्यक्ति के विकास पर केंद्रित रहा है। व्यक्ति की बौद्धिक तर्क शक्ति का विकास शिक्षा का मुख्य उद्देश्य रहा है। नई शिक्षा नीति 2020 को समझने पर ज्ञात होता है कि विद्यार्थी को उसकी रुचि के अनुसार अपने विषय चयन की स्वतंत्रता ही नहीं बल्कि पारंपरिक शैली को भी परिवर्तित करने का कार्य करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के द्वारा हम राष्ट्र निर्माण की ओर एक कदम बढ़ा रहे है, जहाँ दुनिया भारत की ओर आशा भरी नजर से देख रही है उसकी आधार शीला का कार्य यह नई शिक्षा नीति 2020 के द्वारा प्रारंभ किया गया है, जिसने शिक्षा प्रणाली में अनेक रास्ते खोलने का कार्य किया है।

परिचय

नई शिक्षा नीति पाठ्यक्रम को सरल और स्पष्ट करने का कार्य करती है यह विभिन्न सूचनाओं को सरल तरीके से प्रस्तुत करने का माध्यम माना जाता है, जिससे विद्यार्थी सामान्य रूप से अपनी समझ को विकसित करने का प्रयास करता है, हम इसका प्रयोग सामान्य प्रकार के प्रश्न का निर्माण करते हुए उनसे उनकी समझ का परिचय प्राप्त कर सकते है। विद्यार्थी को पाठ्यक्रम के द्वारा किसी भी घटना या परिस्थिति का मूल्यांकन करने का उत्साह उत्पन्न करना आवश्यक होता है। जिससे वह अपने अध्ययन का प्रयोग जीवन में करने योग्य निर्मित हो सके।

नई शिक्षा नीति में प्रश्न पत्र निर्माण उचित प्रकार समझाया गया जिससे संपूर्ण पाठ्यक्रम को आधार बनते हुए विद्यार्थी के ज्ञान का परीक्षण किया जा सकता है। प्रश्न पत्र के द्वारा एक विषय को दूसरे विषय के साथ जोड़ कर प्रश्न करना अधिक लाभ दायक होता है जिससे विद्यार्थी की प्रतिभा और उसके स्तर का निर्धारण किया जा सकता है विद्यार्थी को समझ निर्माण का आधार भी बनया जा सकता है। विद्यार्थी अपने ज्ञान को भिन्न–भिन्न भागों में बाँट कर समझ सकता है जो सरल माध्यम होता है। क्या, क्यूँ ,कैसे, कब, कहाँ जैसे प्रश्न को महत्व मिलता है, यह एक प्रकार का प्रावधान है, जिससे एक समस्या का पता लगाया गया, उसके निदान के उपाय खोजने के लिए प्रविधि का निर्धारण किया गया जिससे उस समस्या

का निराकरण हेतु उपाय किया जा सके। उसके तथ्यों को ध्यान में रखते हुए प्रविधि का प्रयोग करना जिससे उत्तम निष्कर्ष निकाला जा सके, इस शिक्षा नीति में विद्यार्थियों के लिए बनाए जाने वाले प्रश्न पत्र का महत्व समझते हुए उसके निर्माण का क्रम समझाया गया है, जिससे एक पाठ्यक्रम के द्वारा विद्यार्थी की समझ को परिपक्वता प्रदान की जा सके।

भारतीय शिक्षा व्यवस्था गुरुकुल आधार पर संचालित होती थी, जिसमें गुरु और शिष्य का आत्मीय संबंध स्थापित होता था। शिष्य की परीक्षा जन–सामान्य की उपस्थिति में होती थी, इसके लिए शिष्य किसी के द्वारा किए गए प्रश्न का उत्तर देता था। यह प्रणाली समाज के विकास में सहायक रही, वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में परीक्षा और नौकरी को लक्ष्य बनाकर विद्यार्थी अध्ययन कर रहे है, जिसके कारण समाज का संपूर्ण विकास नहीं होता बल्कि समाज में व्याप्त बुराइयों को बढ़ावा मिल रहा है। भारत में आधुनिक शिक्षा व्यवस्था ने व्यक्ति को अर्थ प्रधान समाज निर्माण की ओर आकर्षित किया जिसका एक मात्र लक्ष्य रहा है अधिक से अधिक धन अर्जन करना। इस व्यवस्था ने समाज को अनेक भागों में विभक्त कर दिया है। नई शिक्षा नीति के द्वारा मनुष्य को नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं व्यावहारिक मूल्यों का ज्ञान कराया है। यह व्यवस्था समाज को नए मार्ग पर ले जाने में सहायक सिद्ध होगी। तकनीक के इस युग में भारत को नए नए प्रतिमान स्थापित करने है जिसके लिए शिक्षा व्यवस्था का मजबूत होना आवश्यक है। शिक्षा में परिवर्तन से भविष्य को बेहतर बनाने का कार्य किया जा सकता है। भारतीय पद्धति का ज्ञान मनुष्य को सामाजिक संरचना को सरल रूप से समझने में सहायक होगा। यह व्यवस्था बच्चे को एक संस्था से दूसरी संस्था में परिवर्तन को आसान बनती है जिसके कारण किसी जरूरत के समय बच्चा अपनी शिक्षा बिना किसी रुकावट के निरंतर रूप से पाने में सक्षम हो सके। यह व्यवस्था तकनीक और आधुनिक शैली को महत्व देने का कार्य करती है, जिसके अंतर्गत युवा को बेहतर व्यक्ति बनाने में सफलता प्राप्त हो सके। आधुनिक समाज में व्यक्ति का विस्थापन निरंतर होता रहता है जिस कारण से अनेक बच्चे अपनी शिक्षा को पूर्ण नहीं कर पाते परंतु नई शिक्षा नीति ने उनको भी अपने संस्था में उसी वर्ष परिवर्तन का विकल्प दिया है।

वर्तमान समय में जब प्रतिस्पर्धा का निरंतर विकास हो रहा है उस समय सभी विद्यालय एवं विश्वविद्यालयों की समान दाखिला परीक्षा प्रक्रिया से पारदर्शिता बढ़ती है। सभी बच्चों को समान अवसर प्राप्त होता है, जिससे भेद–भाव की भावना भी समाज में अपनी जड़े नहीं जमा सकती है। नई शिक्षा नीति निश्चित ही भविष्य में बेहतर परिणाम प्रदान करेगी। समाज में परिवर्तन होते रहते है, चाहे किसी भी क्षेत्र में हो, यदि उसका परिणाम सकारात्मक हो तो बहुत ही अच्छा होता है। भारतीय शिक्षा प्रणाली में 35 सालों बाद यह परिवर्तन हुआ है जिसका स्वागत करना आवश्यक है। स्वतंत्र भारत में भारतीय ज्ञान परंपरा से जोड़कर शिक्षा व्यवस्था का निर्माण अपने आप में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस योजना के साथ ही बहुत बड़ी जिम्मेदार भी जुड़ गई है साथ ही साथ लक्ष्य भी जुड़ा है और लक्ष्य के पहुंचने के साधन भी जुड़े हैं।

नई शिक्षा नीति का धरातल पर उतरना एक चुनौती है जिसके लिए संस्थानों को तैयार किया गया तथा सभी को एक साथ जोड़कर बेहतर परिणाम के लिए प्रेरित किया जाना आवश्यक होता जा रहा है। शिक्षा प्रणाली के संदर्भ में कुछ विचार मन में आते है यह नई शिक्षा नीति निश्चित ही दूरगामी परिणाम का प्रारंभ है। हमारी वर्तमान शिक्षा व्यवस्था तीन प्रमुख चरणों में बंटी है– पाठ्यक्रम तय करना, उसके अनुसार विद्यार्थियों को पढ़ना, और अंत में प्रश्नों के आधार पर परीक्षा लेना। पाठ्यक्रम तय करने वाले, उसे पढ़ाने वाले और उसे ग्रहण करने वाले भिन्न–भिन्न व्यक्ति होते हैं। उनमें आपस में कोई तालमेल नहीं होता है। शिक्षा नीति को तय करने वाली इस संपूर्ण प्रक्रिया में हमें जिस विद्यार्थीयों को शिक्षित करना है उसकी रूचि, प्रतिभा, स्थानीय परिस्थिति और उसकी आवश्यकता इन सब बातों का कहीं कोई मेल अथवा विचार ही नहीं होता है। प्राप्त शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में अपनी संस्कृति परंपराओं से जुड़े मूल्यों,

आधुनिकता और भारतीय सामाजिकता की चेतना के संदर्भ में निष्ठा कैसे निर्माण की जा सकती है? विद्यार्थियों मे निर्माण हुई उन उच्च मूल्य शिक्षा को और किस प्रकार से विकसित किया जा सकता है? इस प्रकार का योजनाबद्ध दृष्टिकोण भारत की स्वतंत्रता के बाद आज तक विकसित नहीं किया गया है।

शिक्षा के माध्यम से मनुष्य में आधुनिक मूल्यों के प्रति संवेदनशीलता, विश्वास और उसका अनुकरण करने की निष्ठा कैसे विकसित की जा सकती है, इसके लिए हमारी वर्तमान शिक्षा कौन से प्रयास कर रही है? क्योंकि शिक्षा ऐसी प्रक्रिया है जिसे पाकर जब विद्यार्थी बाहरी व्यावहारिक जीवन में प्रवेश करता है, तब उसमें प्राप्त शिक्षा से स्वतंत्र विवेक शक्ति की वृद्धि होनी चाहिए। क्या ऐसा होता है? क्या उस शिक्षा से सामाजिक समरसता का भाव उस विद्यार्थी निर्माण होता है? क्या सामाजिक व्यवहार में अहिंसा –भाईचारा जैसे विचारों का वह कोई उपयोग कर पाता है? क्या हमारी वर्तमान शिक्षा नीति सामाजिक सहयोग की मानसिकता का विद्यार्थी में विकास कर रही है? जब गहराई से सोचें तो इन सब सवालों के हमें संतोषजनक जवाब नहीं मिलते हैं। इसका मतलब यह है कि आज हम जो शिक्षा ले रहे हैं वह राष्ट्रीय एवं सामाजिक जीवन को उन्नत करने में व्यक्ति को प्रोत्साहित नहीं कर रही है। कोई विद्यार्थी किसी अन्य कला में विशिष्ट प्रतिभा रखता हो, लेकिन गणित, वाणिज्य, विज्ञान जैसे विषयों में उसे गति न हो फिर भी उसे ऐसे रुचिहीन विषयों की ओर जबरन ढकेलने की चेष्टा की जाती है अथवा उसे आगे की शिक्षा से वंचित होना पड़ता है। यह बात उस विद्यार्थी के प्रति अन्याय ही है। जो शिक्षा प्रक्रिया वर्तमान में चल रही है वह मनुष्य की स्वतंत्रता और गरिमा को बेदखल करने वाली है। वर्तमान शिक्षा प्रक्रिया अपने गलत स्वरूप और व्यवहार के कारणों से विद्यार्थियों को विपरीत दिशा में ले जा रही है। यह विपरीत दिशा भारत स्वतंत्र होने के बाद 70 सालों से निरंतर चल रही है। यह बिल्कुल जरूरी नहीं है कि सभी विद्यार्थियों का सामान्य ज्ञान अति उत्तम श्रेणी का ही हो। उसका ज्ञान तो रटेरटाए जवाबों से तय होता है। इसी आधार पर हम विद्यार्थियों की योग्यता व अयोग्यता तय करने में लगे हुए हैं। विद्यार्थियों की क्षमता और योग्यता पर सवालिया निशान नहीं लगने चाहिए। सवाल तो उस शिक्षा प्रणाली के औचित्य पर लगना चाहिए जो परीक्षा में अच्छे अंक पाने का ही ज्ञान विद्यार्थियों को देती है।

नई शिक्षा नीति के निर्माण से भारत को विश्व स्तर पर स्थापित करने में सहायता प्राप्त होगी। 21वीं सदी तकनीक की सदी है इस युग में विश्व के साथ कदम से कदम मिलने के लिए शिक्षा में तकनीक और नवीन शोध का ज्ञान होना आवश्यक है। इस संदर्भ में गंगवाल सुभाष 2020 ने लिखा है कि 21वीं सदी ज्ञान प्रधान सदी है जिसमें विज्ञान एवं तकनीकी विकास परिवर्तन के प्रमुख आधार है। किसी भी देश, समाज और परिवार, समृद्ध एवं प्रतिस्पर्द्धी बनाने के लिए शिक्षा को महत्व देना होगा। भारत में शिक्षा केंद्र एवं राज्यों का विषय है। केंद्र सरकार राष्ट्रीय हित में शिक्षा का मसौदा तैयार करती है, जिनका अनुमोदन संसद द्वारा लिया जाता है लेकिन राज्यों की विधान सभाओं को भी विचार विमर्श, बहस के माध्यम से अनुमति प्रदान करनी होती है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को सहभागी बनाया गया है। यह नीति विद्यार्थियों को कार्य कौशल सीखने को महत्व देती है, वर्तमान समय में रोजगार की बढ़ती माँग को नियंत्रित करने एवं आत्मनिर्भर बनाए के लिए शिक्षा में कौशल युक्त शिक्षा को बढ़ावा देना प्रारंभ किया है।

इस संदर्भ में प्रो. शर्मा के. एल. 2020 ने अपने लेखपत्र में लिखा है कि शिक्षा से सशक्त और सविमर्शी समाज बनया जा सकता है लेकिन शिक्षा इतनी गुणवत्तापरक हो कि मानुष्य खुद को स्वतंत्र, रचनात्मक और नैतिक दृष्टि समझ सके। शिक्षा परिवर्तन और सशक्तिकरण का साधन है। शिक्षा को महत्व देते हुए व्यक्ति को नवीन दृष्टि प्रदान करना एवं उसकी क्रिया शीलता का विकास करना शिक्षा का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए, जिसके द्वारा व्यक्ति एक सभ्य समाज का निर्माण करने में सफल हो सकता है। शिक्षा विद्यार्थी को यदि सामाजिक आर्थिक एवं राजनैतिक विवेचना की दृष्टि प्रदान नहीं करती तो वह नीति

अनुचित हो जाती है। भारत की प्राचीन शिक्षा के मूल को देखने पर ज्ञात होता है की शिक्षा के द्वारा अनेक प्रकार के परिवर्तन प्रस्तुत हुए है।

सिंह दुर्गेश 2020 ने अपने लेख पत्र में लिखा है कि भारत कि वर्तमान शिक्षा वयवस्था त्रिस्तरीय है जिसमें प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा शामिल है। यह शिक्षा व्यवस्था शिक्षित लेकिन रोजगार विहीन युवाओं को तैयार करती है। जिससे स्पष्ट होता है कि भारतीय शिक्षा व्यवस्था विश्व स्तर के कुशल एवं दक्ष युवा तैयार करने में सक्षम नहीं है। सरकार को इसके लिए शिक्षा में निवेश करना होगा। देश के युवाओं को रोजगार प्रदान करना तथा उनको अपने खुद के कारखाने प्रारंभ करने पर ज़ोर दिया जा रहा है। वर्तमान में शिक्षा का दबाव युवा को स्वावलंबी बनाने का है, जिससे राष्ट्र और राज्य दोनों को लाभ प्राप्त होता है।

नई शिक्षा नीति के द्वारा पाठ्यक्रम के माध्यम से प्राप्त परिणाम के महत्व को समझते हुए विद्यार्थियों के अंदर होने वाले परिवर्तन का विस्तृत वर्णन किया गया है। यूजीसी के द्वारा पाठ्यक्रम में जो परिवर्तन किए गए उनका महत्व निकट भविष्य में दिखाई देगा। यह परिवर्तन भारत को विश्व पटल पर सर्वोत्तम स्थान पर स्थापित करने में सहायक सिद्ध होगा। नई शिक्षा नीति का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की सोच और रचनात्मक क्षमता में विस्तार करना है जिसके द्वारा विद्यार्थी को रुचिकर माध्यम से सीखने के लिए जागरूक किया जा सकता है। विद्यार्थी की तार्किक शक्ति के विकास में नई शिक्षा नीति की सक्रिय भूमिका है जिससे यह प्रक्रिया और अधिक कुशल हो रही है। नई शिक्षा नीति विद्यार्थियों को सीखाने के लिए पुस्तकों का बोझ बढ़ाने के बजाय व्यावहारिक एवं कौशल प्रधान शिक्षा को बढ़ाने पर ज्यादा केंद्रित है। विद्यार्थी को पाठ्यक्रम के चयन उसके विषयों के साथ–साथ सीखने की इच्छा रखने वाले पाठ्यक्रम का चयन करने की भी स्वतंत्रता होगी, इस तरह से कौशल विकास को भी बढ़ावा मिलेगा।

वर्तमान में भारत के नागरिकों को रोजी–रोटी के लिए सक्षम बनाने का प्रयास ही मुख्य रहा है। इस प्रकार की शिक्षा का अर्थ यह नहीं है कि हम भारत के नागरिकों को अपनी शिक्षा के माध्यम से सर्वांगीण तरीके से विकसित कर रहे हैं। शिक्षा का अर्थ होता है विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना। शिक्षा प्राप्त करने के बाद जब विद्यार्थी अपने व्यवहारिक जीवन में आता है, तो वह जीवन की संपूर्ण चुनौतियों को स्वीकार करने के लिए तैयार होना चाहिए। हमारी संपूर्ण शिक्षा प्रणाली इस बात पर खड़ी हुई है कि विद्यार्थी अपने शिक्षा जीवन में प्रश्नपत्रिका में आने वाले सवालों के जवाब हल करने के लिए सिर्फ रटीरटाई पढ़ाई करते हैं।

लॉर्ड मैकाले ने इस देश में सिर्फ क्लर्क बनाने की शिक्षा प्रदान की थी। मैकाले की शिक्षा नीति के माध्यम से देश में ऐसे शिक्षितों की पैदाइश तो बढ़ाई है, जिनका शरीर भारतीय है लेकिन दिमाग अंग्रेजी है। लेकिन भारत देश स्वतंत्र होने के बाद हमने क्या किया? यह भी सवाल निर्माण होता है। स्वतंत्रता के बाद पिछले 70 सालों में भारत देश में स्कूलों, कॉलेजों की संख्या बहुत बढ़ी है। ग्रामीण स्तर से लेकर शहरों तक साक्षरता का अनुपात भी बढ़ा है। लेकिन यह सवाल बार–बार उठता है कि क्या हमारी वर्तमान शिक्षा से पूरी तरह भारतीय व्यक्तित्व तैयार होकर बाहर आता है? हमारी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य क्या है? हमारा दुर्भाग्य यह है कि भारत देश की स्वतंत्रता के बाद भी हम शिक्षा के क्षेत्र में कोई क्रांतिकारी परिवर्तन ला नहीं सके। हमने आने वाली पीढियों को सिर्फ इन सवालों में उलझाए रखा कि परीक्षा में आने वाले सवालों का जवाब सही तरीके से देने पर जीवन की परीक्षा में हम सफल हो सकते हैं। लेकिन जीवन की सही परीक्षा में सफलता पाने में यह मददगार होते नजर नहीं आ रहा है। सरकार के इस रवैए पर अनेकों बार कई माध्यमों ने, शिक्षा से जुड़े विचारकों ने चिंता प्रकट की थी। लेकिन हमारे देश के राजनैतिक नेताओं को शिक्षा का यह विषय चिंता करने योग्य कभी नहीं लगा, यह हमारा दुर्भाग्य है।

भारतीय परंपरा में शिक्षा देने वाला जो शिक्षक है उसे अत्यंत आदर का स्थान होता है। अपनी भारतीय परंपरा में हमारे शिक्षकों का लक्ष्य सदा अपने छात्रों के कल्याण का होता था। भारतीय परंपरा में ऐसे गुरुओं की भरमार हैं, जिन्होंने कड़ी कसौटी पर खरे उतरने वाले गुणवान विद्यार्थियों का निर्माण किया है। उन्होंने तत्कालीन भारत को विकसित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। लेकिन आज वह एक पौराणिक कथा सी लगती है और ऐतिहासिक कथाओं में जमा होकर रह गई हैं। शिक्षा की गुणवत्ता सुधार में महत्वपूर्ण सहभाग अध्यापक का होता है। क्या आज हमारा अध्यापक इस तरह की शिक्षा देने में सक्षम है? आज अपने अध्यापक उनकी क्षमताओं और चारित्रिक गुणों की कल्पना किस प्रकार से करते हैं? वह तो सरकारी या निजी शैक्षणिक संस्थाओं के आदेशों से पूरी तरह से बंधा हुआ नौकर लगता है। स्वतंत्रता के बाद हमारी शिक्षा व्यवस्था ज्यादातर अप्रशिक्षित अध्यापकों की समस्या से जूझ रही है, जिस वास्तविकता को हमें स्वीकार करना ही होगा। जब हमारी वास्तविक चिंता शिक्षा का फिसड्डी स्तर यह है, तब शिक्षा से जुड़े इन प्रश्नों के संतोषजनक उत्तर प्राप्त किए बिना हम आगे नहीं बढ़ सकते।

भारतीय जनमानस में अपनी शिक्षा नीति को लेकर जब चिंता निर्माण हो रही थी, उस समय नई शिक्षा नीति 2020 के प्रस्तुत की गई है। इस शिक्षा नीति में मानवीय मूल्यों से युक्त नागरिक बनाने की कोशिश महसूस होती है। इसमें ऐसा लचीलापन महसूस होता है जो वर्तमान शिक्षा की जड़ता को तोड़ सके। शिक्षार्थियों ने जो भी अपना समय शिक्षा के लिए दिया है उसका कोई ना कोई लाभ उसे मिल सकता है। इन बातों को सुनिश्चित करने का प्रयास इस नई शिक्षा नीति में किया गया है। जैसे एक विज्ञान का विद्यार्थी संगीत की पढ़ाई कर सकता है। विज्ञान और संगीत दोनों विषय उस विद्यार्थियों को रचनात्मक बना सकते हैं। संगित से आत्मिक आनंद मिल सकता है और विज्ञान से व्यवसायिक लाभ भी हो सकता है। पश्चिमी देशों की शिक्षा व्यवस्था के साथ भारतीय शिक्षा व्यवस्था के गहन संवाद स्थापित करने की कोशिश शिक्षा नीति 2020 में महसूस होती है। संपूर्ण देश में पांचवीं कक्षा तक अनिवार्य रूप से, आठवीं तक वरीयता के आधार पर और उसके बाद ऐच्छिक आधार पर मातृभाषा और स्थानीय भाषा से छात्रों को शिक्षा लेने का प्रावधान है। जिसके कारण मातृभाषा और स्थानीय भाषाओं से अपने सामाजिक अनुभव, संवेदना, मूल्य और भावनात्मकता से जोड़े जा सकते हैं। आज की शिक्षा प्रणाली में छोटासा शिशू अपनी शिक्षा का प्रारंभ करते ही उसका स्व–संस्कृति से सबंध कटना शुरू हो जाता है। शिक्षा पूरी करके जब वह सांसारिक जीवन में प्रवेश करता है, तब तक तो वह अपने सामाजिक, सांस्कृतिक अनुभवों और संवेदनाओं की परंपरा से बहुत बड़ा अंतर रखता है। शिक्षा के विभिन्न द्वारों के माध्यम से प्रवेश की व्यवस्था और विषय से बाहर निकलने की लचीली व्यवस्था बनाने की योजना इस नई शिक्षा प्रणाली में है। कोई कहीं से भी किसी भी कोर्स में आ सकता है, बाहर जा भी सकता है। कोई भी कोर्स छोड़कर जाने के बाद में उसका उसमें गुजरा समय बेकार नहीं जाएगा ऐसी व्यवस्था नई शिक्षा नीति के विकसित होने जा रही है। वैश्विक विश्वविद्यालयों के देश में आगमन और निजी क्षेत्र के उत्कृष्ट विश्वविद्यालयों के प्रसार से नई व्यवस्था आसान बनने की संभावना दिखाई दे रही है। इस शिक्षा नीति को आकार देने वाली मोदी सरकार ने इसे व्यावहारिक और भावनात्मक जामा प्रदान करने में भी कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी है।

नई शिक्षा निति का मुख्य उद्देश्य एक बच्चे को कुशल बनाने के साथ–साथ, जिस भी क्षेत्र में वह रुचि रखता हैं, उसी क्षेत्र में उन्हें प्रशिक्षित करना है, जिसके द्वारा विद्यार्थी को उससे जुड़े हुए औद्योगिक क्षेत्र में कार्य करने का अवसर प्राप्त हो सके। यह नीति सभी को समान अवसर प्रदान करने पर ज़ोर दे रही है जिससे सभी का समान रूप से विकास हो सके। अपनी रुचि के आधार पर विषय चुनाव और पाठ्यक्रम निर्माण से विद्यार्थी के समझने में आसानी होगी साथ ही वह कम समय में अधिक पाठ्यक्रम को पूर्ण करने में सक्षम होगा, इस तरह, सीखने वाले अपने उद्देश्य, और अपनी क्षमताओं का पता लगाने में सक्षम होते हैं, जिससे उनकी सफलता के मार्ग भी आसान हो जाते है। यह शिक्षा नीति विद्यार्थी को सरल

और सफल जीवन की ओर ले जाने का एक प्रयास है। नई शिक्षा नीति में शिक्षक की शिक्षा और प्रशिक्षण प्रक्रियाओं के सुधार पर भी जोर दिया गया है। यह शिक्षा व्यवस्था शिक्षक को भी निरंतर नवीन विषय सीखने के लिए प्रेरित करती है जिससे विद्यार्थी के सभी प्रश्न का उत्तर शिक्षक सरलता पूर्वक देने में सक्षम हो सके।

बाजार और समय की जरूरतों के अनुसार शिक्षा को ढालने की एक समय आलोचना की जाती थी। लेकिन अब रोजगार और बाजार एक दूसरे से जुड़ते जा रहे हैं। अब विदेशी संस्थानों से उनसे मुकाबला कर भारतीय उच्च शिक्षा को विश्व स्तर पर स्थापित करने की जरूरत है। अब देखना है कि अपनी सामाजिक संपदा, देश का ज्ञान और लोग भावनात्मकता को आधुनिकता से जोड़कर यह नई शिक्षा नीति क्या भारत में परिपूर्ण नागरिक के निर्माण का मार्ग प्रशस्त कर पाएगी? आत्मनिर्भर भारत बनाना है तो ऐसी ही शिक्षा उसकी आधारशिला बन सकती है। इसलिए नई शिक्षा नीति का स्वागत करना अत्यंत आवश्यक है। नई शिक्षा नीति भविष्य में एक दूरगामी परिणाम का प्रारंभ है। लेकिन दो बातों में सतर्कता आवश्यक है। पहली बात तो यह है कि उत्कृष्ट संकल्पना और योजनाएं तैयार करने में हम सदैव अग्रसर रहे हैं। लेकिन जब उस योजना को अमल में लाने का समय आता है तो उन योजनाओं में बहुत सारी खामियां महसूस होने लगती हैं। दूसरी बात यह है के इस नई शिक्षा नीति के तहत शिक्षा ग्रहण करके जब लाखों विद्यार्थी निकलेंगे, तब उनके योग्यता के अनुसार उन्हें रोजगार के अवसर उपलब्ध होने आवश्यक है। सकारात्मक, भ्रष्टाचार मुक्त प्रशासन, कृषि, उद्योग, व्यापार जैसे क्षेत्रों को गति देने की जरूरत है।

नई शिक्षा प्रणाली से निर्माण होने वाले विद्यार्थियों को उनकी नवप्रतिभा के अनुसार सापेक्ष अवसर निर्माण करने होंगे। पाठ्यक्रम सुधारने या बदलने से शिक्षा में कोई बुनियादी परिवर्तन नहीं लाया जा सकता है। मूल्यहीन पूरी शिक्षा प्रक्रिया को बदलना अत्यंत आवश्यकता था। मोदी सरकार में इस परिवर्तन प्रक्रिया को प्रारंभ किया हुआ है। सत्तर साल से चली आ रही जो स्कूली प्रक्रिया थी उस प्रक्रिया को बदलना प्रारंभ हुआ है। विद्यार्थियों के आचरण में भारतीय मूल्यों के संदर्भ में हीनता और विरोधाभास का भाव निर्माण करने वाली मैकाले की शिक्षा प्रणाली को बदलने का प्रारंभ हो रहा है। नई शिक्षा नीति से भारत को आत्मनिर्भर बनाने वाली नई पीढ़ी भारत में अग्रसर होनी आवश्यक है।भरते हैं। हमारी वर्तमान शिक्षा व्यवस्था तीन चरणों में बंटी है– पाठ्यक्रम तय करना, उसके अनुसार विद्यार्थियों को पढ़ना, और अंत में प्रश्नों के आधार पर परीक्षा लेना। पाठ्यक्रम तय करने वाले, उसे पढ़ाने वाले और उसे ग्रहण करने वाले भिन्न–भिन्न व्यक्ति होते हैं। उनमें आपस में कोई तालमेल नहीं होता है। शिक्षा नीति को तय करने वाली इस संपूर्ण प्रक्रिया में हमें जिस विद्यार्थीयों को शिक्षित करना है उसकी रूचि, प्रतिभा, स्थानीय परिस्थिति और उसकी आवश्यकता इन सब बातों का कहीं कोई मेल अथवा विचार ही नहीं होता है। प्राप्त शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में अपनी संस्कृति परंपराओं से जुड़े मूल्यों, आधुनिकता और भारतीय सामाजिकता की चेतना के संदर्भ में निष्ठा कैसे निर्माण की जा सकती है? विद्यार्थियों में निर्माण हुई उन उच्च मूल्य शिक्षा को और किस प्रकार से विकसित किया जा सकता है? इस प्रकार का योजनाबद्ध दृष्टिकोण भारत की स्वतंत्रता के बाद आज तक विकसित नहीं किया गया है।

शिक्षा के माध्यम से मनुष्य में आधुनिक मूल्यों के प्रति संवेदनशीलता, विश्वास और उसका अनुकरण करने की निष्ठा कैसे विकसित की जा सकती है, इसके लिए हमारी वर्तमान शिक्षा कौन से प्रयास कर रही है? क्योंकि शिक्षा ऐसी प्रक्रिया है जिसे पाकर जब विद्यार्थी बाहरी व्यावहारिक जीवन में प्रवेश करता है, तब उसमें प्राप्त शिक्षा से स्वतंत्र विवेक शक्ति की वृद्धि होनी चाहिए। क्या ऐसा होता है? क्या उस शिक्षा से सामाजिक समरसता का भाव उस विद्यार्थी निर्माण होता है? क्या सामाजिक व्यवहार में अहिंसा –भाईचारा जैसे विचारों का वह कोई उपयोग कर पाता है? क्या हमारी वर्तमान शिक्षा नीति सामाजिक सहयोग की मानसिकता का विद्यार्थी में विकास कर रही है? जब गहराई से सोचें तो इन सब सवालों के

हमें संतोषजनक जवाब नहीं मिलते हैं। इसका मतलब यह है कि आज हम जो शिक्षा ले रहे हैं वह राष्ट्रीय एवं सामाजिक जीवन को उन्नत करने में व्यक्ति को प्रोत्साहित नहीं कर रही है।

निष्कर्ष– वर्तमान शिक्षा प्रणाली वर्ष 1986 की मौजूदा शिक्षा नीति में किए गए परिवर्तनों का परिणाम है। इसे शिक्षार्थी और देश के विकास को बढ़ावा देने के लिए लागू किया गया है। नई शिक्षा नीति बच्चों के समग्र विकास पर केंद्रित है। इस नीति के तहत वर्ष 2030 तक अपने उद्देश्य को प्राप्त करने का लक्ष्य है। नई शिक्षा नीति कई उपक्रमों के साथ रखी गई है जो वास्तव में वर्तमान परिदृश्य की जरूरत है। नीति का संबंध अध्ययन पाठ्यक्रम के साथ कौशल विकास पर ध्यान देना है। किसी भी चीज के सपने देखने से वह काम नहीं करेगा, क्योंकि उचित योजना और उसके अनुसार काम करने से केवल उद्देश्य पूरा करने में मदद मिलेगी। जितनी जल्दी एनईपी के उद्देश्य प्राप्त होंगे, उतना ही जल्दी हमारा राष्ट्र प्रगति की ओर अग्रसर करेगा। विकसित भारत 2047 के लिए नई शिक्षा नीति का निर्माण बहुत ही आवश्यक कदम है जिसको पहला प्रयास कहना भी अनुचित नहीं होगा। यह प्रयास भारत को विकास की ओर ले जाने का मार्ग प्रसस्त करेगा।

- प्रो. के. एल. शर्मा, दैनिक भास्कर जयपुर संस्करण, पृष्ठ संख्या, 2 24 अगस्त 2020
- सिंह दुर्गेश, क्रानिकल मासिक पत्रिका, मई 2020 पृष्ठ संख्या 80–81
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार
- प्रकाश कुमार, 21वीं सदी की माँग पूरी करेगी शिक्षा नीति, आउटलुक हिंदी, 24 अगस्त 2020
- गंगवार सुभाष, नई शिक्षा नीति 21वीं सदी की चुनौतियों का करेगी मुक़ाबला, दैनिक नवज्योति, पृष्ठ संख्या–4, 22 अगस्त 2020
- दृष्टि, जीम अपेपवद (चर्चित मुद्दे) नई शिक्षा नीति, 2020
- गौरव, कुमार, नई शिक्षा नीति, हिंदी की दुनिया.कॉम, 26 अक्तूबर 2020

****